067 सूरह मुल्क का आसान खुलासा.

ये सूरह का खुलासा दीन-ए-इस्लाम को समझने और अपनी इस्लाह का एक ज़रिया हे, लिहाज़ा ये किसी भाषा या व्याकरण (ग्रामर) का अदब नहीं है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

बडी शान है उस ज़ात की जिस्के हाथ मे सारी बादशाही है, और वह हर चीज़ पर पूरी तरह कादिर है। जिसने मौत और ज़िन्दगी इसलिये पैदा की ताकि वह तुम्हें आजमाये कि तुम मेसे कौन अमल मे ज़्यादा बेहतर है, और वही है जो मुकम्मल ताकत व इख्तियार का मालिक और बहुत बख्शने वाला है।

जिसने सात आसमान ऊपर-नीचे पैदा किये, तुम मेहरबान खुदा के बनाने और पैदा करने मे कोई फर्क नहीं पाओगे (फर्क का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने कायनात की हर चीज़ एक खास सन्तुलन और ताल-मेल के साथ पैदा फरमाई है, इस्मे कहीं मन-गढत नहीं है), अब फिर से नज़र दौडाकर देखो क्या तुम्हें कोई रखना नज़र आता है?। फिर बार-बार नज़र दौडाओ, नतीजा यही होगा कि नज़र थक-हारकर नाकाम लौट आयेगी।

और हमने करीब वाले आसमान को रोशन चिरागों से सजा रखा है, और उनको शैतानों पर पत्थर बरसाने का ज़रिया भी बनाया है, (चिरागों से मुराद सितारे और अजरामे फलकी है जो

रात के वक्त सजावट का भी ज़रिया बनते है और उनसे शैतानों को मारने का काम भी लिया जाता है) और उनके लिये दहकती आग का अज़ाब तैयार कर रखा है।

और जिन लोगों ने अपने परवर्दिगार से कुफ्र का मामला किया है उनके लिये जहन्नम का अज़ाब है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जायेंगे तो उसके दहाडने की आवाज़ सुनेंगे, और वह जोश मारती होगी। ऐसा लगेगा जैसे वह गुस्से से फट पडेगी, जब भी उसमें काफिरों का कोई गिरोह फेका जायेगा तो उसके निगराण फरिश्ते उनसे पूछेगे कि क्या तुम्हारे पास कोई खबरदार करने वाला नहीं आया था?।

वे कहेंगे कि हां बेशक हमारे पास खबरदार करने वाला पैगम्बर और रसूल आया था, मगर हमने उसे झुठला दिया, और कहा कि "अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया, तुम्हारी हकीकत इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम बडी भारी गुमराही मे पडे हुए हो"। और वे कहेंगे कि “अगर हम सुन लिया करते और समझ से काम लिया करते तो आज दोज़ख वालों मे शामिल ना होते"। इस तरह वे अपने गुनाह का खुद कुबूल कर लेंगे, गर्ज कि फटकार है दोज़ख वालों पर। इसके विपरीत जो लोग बिन देखे अपने परवर्दिगार से डरते है, उनके लिये बेशक मगफिरत और बडा अज्र है।

और तुम अपनी बात छुपाकर करो या ज़ोर से करो, सब उसके इल्म मे है, क्योंकि वह दिलों तक की बातों का पूरा इल्म रखने वाला है। भला जिसने पैदा किया वही ना जाने? जबकि वह बहुत बारीकी की नज़र रखने वाला, मुकम्मल तौर पर बा-खबर है।

वही है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को तुम्हारे काबू मे कर दिया है, लिहाज़ा तुम उसके मोंढों पर चलो फिरों, और उसका रिज़्क खाओ, और उसी के पास दोबारा ज़िन्दा होकर जाना है (यानी ज़मीन की तमाम चीजें अल्लाह तआला ने तुम्हार कब्ज़े व इख्तियार मे दे दी है, लेकिन इनको इस्तेमाल करते वक्त यह मत भूलो कि तुम्हें हमेशा यहां नहीं रहना, बल्कि एक दिन यहां से अल्लाह तआला ही के पास जाना है, जहां तुम्हें इन नेमतों का हिसाब देना होगा, लिहाज़ा यहां की हर चीज़ को अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक ही इस्तेमाल करो)।

क्या तुम आसमानों वाले की इस बात से बेखौफ हो बेठे हो कि वह तुम्हें जमीन मे धंसा दे, तो वह एक दम थरथराने लगे? (आखिरत का अज़ाब तो अपनी जगह है, लेकिन बुरे आमाल के नतीजे मे इस दुनिया मे भी अज़ाब आ सकता है, जैसे यह कि इनसान को कारून की तरह जमीन मे धंसा दिया जाये और ज़मीन

थरथराने लगे, जिस्के नतीजे मे इन्सान ज़मीन के अन्दर और ज़्यादा धंसता चला जाये)। या क्या तुम आसमान वाले की इस बात से बेखौफ हो बैठे हो कि वह तुम पर पत्थरों की बारिश बरसा दे? फिर तुम्हें पता चलेगा कि मेरा डराना कैसा था?। और इनसे पहले जो लोग थे उन्होंने भी पैगम्बरों को झुठलाया था, फिर देख लो कि मेरा अज़ाब कैसा था?।

और क्या इन्होंने परिन्दों को अपने ऊपर नज़र उठाकर नहीं देखा कि वो परों को फैलाये हुए होते है, और समेट भी लेते है, उनको मेहरबान खुदा के सिवा कोई थामे हुए नहीं है, यकीनन वह हर चीज़ की खूब देखभाल करने वाला है।

भला मेहरबान खुदा के सिवा वह कौन है जो तुम्हारा लश्कर बनकर तुम्हारी मदद करे? काफिर लोग तो खालिस धोखे मे पडे हुए है (यानी ये काफिर लोग जो यह समझते है कि हमारे मन-गढत माबूद हमारी मदद करेंगे, ये खालिस धोखे मे है)। अगर वह अपना रिज़्क बन्द कर दे तो भला वह कौन है जो तुम्हें रिज़्क अता कर सके? इसके बावजूद वे सरकशी और बेज़ारी पर जमे हुए है।

भला जो शख्स अपने मुंह के बल औंधा चल रहा हो, वह मन्ज़िल तक ज़्यादा पहुंचने वाला होगा, या वह जो एक सीधे रास्ते पर चल रहा हो?। कह दो कि "वही है जिसने तुम्हें पैदा किया,

और तुम्हारे लिये कान और आंखें और दिल बनाये, मगर तुम लोग शुक्र कम ही करते हो"। कह दो कि "वही है जिसने तुम्हें ज़मीन मे फैलाया, और उसी के पास तुम्हें इकट्ठा करके लेजाया जायेगा"।

और ये लोग कहते है कि "अगर तुम सच्चे हो तो बताओ कि यह वायदा कब पूरा होगा?" (काफिर लोग बार-बार आखिरत का मज़ाक उडाते हुए यह कहते थे कि अगर आखिरत का अज़ाब बरहक है तो उसमें देर क्यों हो रही है? अभी क्यों नहीं आ जाता?)। कह दो कि "इसका इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है, और मैं तो बस साफ-साफ तरीके पर खबरदार करने वाला हूं"। फिर जब वे उस कियामत के अज़ाब को पास आता देख लेंगे तो काफिरों के चेहरे बिगड जायेंगे और कहा जायेगा कि "यह है वह चीज़ जो तुम मांगा करते थे।"

ऐ पैगम्बर! उनसे कहो कि "जरा यह बतलाओ कि चाहे अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर रहम फरमा दे दोनों सूरतों मे काफिरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचायेगा?" (बहुत से काफिर यह कहा करते थे कि हज़रत मुहम्मदﷺ दुनिया से चले जायेंगे तो इनका दीन खत्म हो जायेगा, चुनांचे वे आपकी वफात का इन्तिज़ार कर रहे थे, जैसा कि सूरह

तूर (आयत 30) मे गुज़रा है).

यहां यह फरमाया जा रहा है कि चाहे अल्लाह तआला आप और आप के साथियो को हलाक फरमाये या उन पर रहम फरमाकर उन्हें फतह अता फरमाये जैसा कि अल्लाह तआला का वायदा है लेकिन इससे तुम्हारे अन्जाम पर तो कोई फर्क नहीं पडता, दोनों सूरतों मे काफिरों को अज़ाब से ज़रूर साबका पडेगा।

कह दो कि "वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाये है, और उसी पर हमने भरोसा किया है, चुनांचे जल्द ही तुम्हें पता चल जायेगा कि कौन है जो खुली गुमराही मे मुब्तला है"।

कह दो कि "ज़रा यह बतलाओ कि अगर किसी सुबह तुम्हारा पानी नीचे को उतरकर गायब हो जाये तो कौन है जो तुम्हें चश्मे से उबलता हुआ पानी लाकर दे दे? (जब यह बात तय है कि पानी समेत हर चीज़ अल्लाह तआला ही के कब्जे मे है तो आखिर उसके सिवा कौन है जो इबादत का मुस्तहिक हो, और कौनसी वजह है की बिना पर उसकी इस कुदरत का इनकार किया जाये कि वह इनसानों को ज़िन्दा करके उन्हें अच्छे-बुरे आमाल का बदला देगा?।

आसान तर्जुमा ए कुरआन. मुफ्ती मुहम्मद तकी उस्मानी दा.ब.